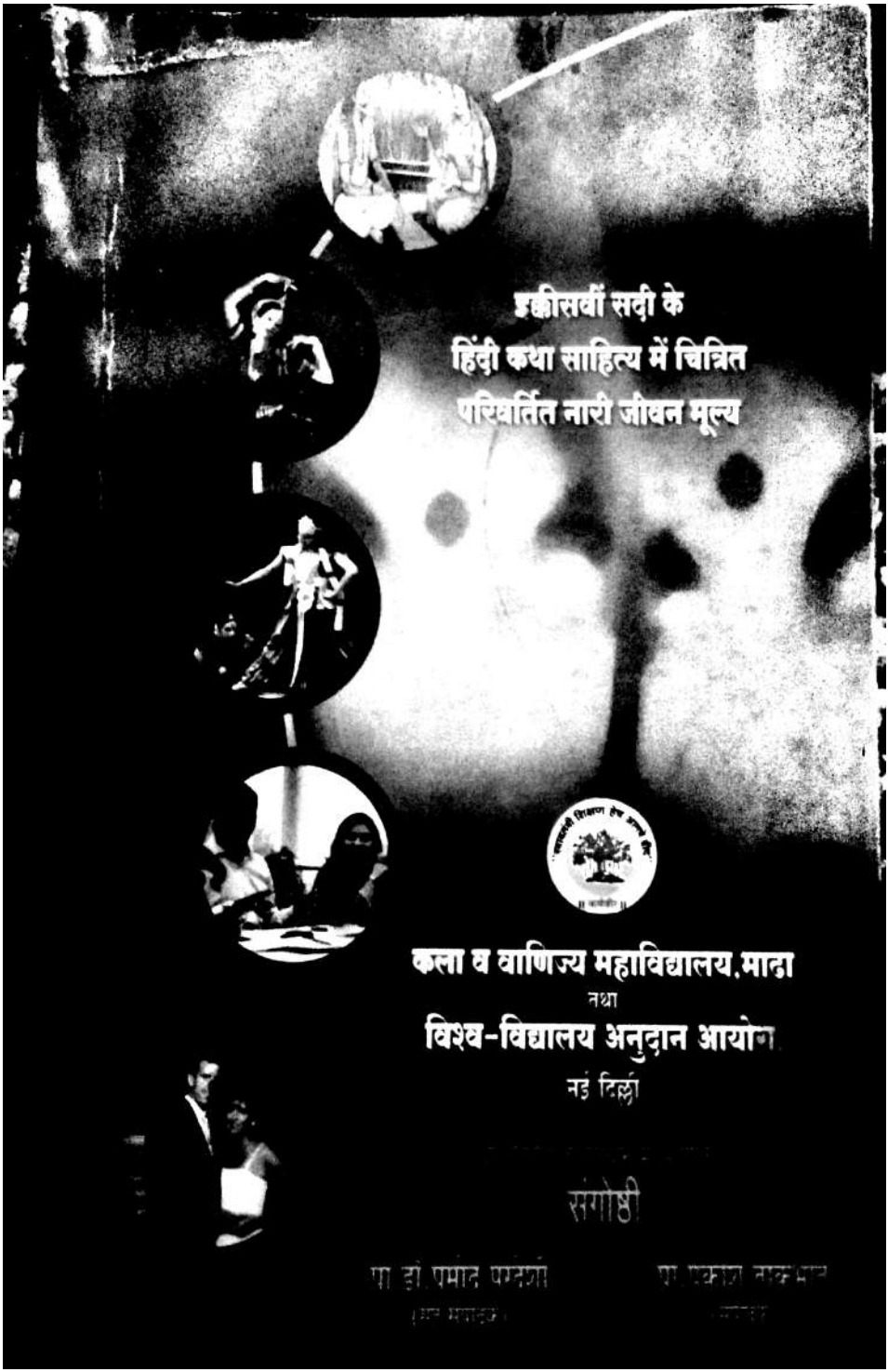

Scanned by CamScanner

इक्कीसवीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन–मूल्य।

प्राचार्य डॉ.पंजाबराव रोंगे
प्रकाशक

प्रा.प्रकाश ताकभाते
संपादक

प्रा.डॉ.प्रमोद परदेशी
सह–संपादक

रयत शिक्षण संस्था संचलित,
कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी।

Scanned by CamScanner

प्रकाशक

डॉ.पंजाबराव रोंगे,
प्राचार्य,
कला व वाणिज्य महाविद्यालय,माढा, जि.सोलापुर

ISBN-978-93-81549-96-4

© -कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा, जि. सोलापुर

केवल व्यक्तिगत वितरण के लिए

संस्करण– फरवरी, 2016

मुद्रक–
प्रिंट ओम ऑफसेट,
269 बी/नर्मदा स्कूल रोड,
सातारा।

सूचना– पुस्तक में प्रकाशित विचारों से संपादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

1.व्यथा–कथा बदलती सोच	डॉ. नवनीत चौहान	पृ.01
2. अपराध एवं देह व्यवसाय की दलदल से मुक्ति कामना का आख्यान: 'रेत'	डॉ. संजय नाईनवाड	पृ.04
3. इक्कीसवीं शती की कहानियों में चित्रित नारी	डॉ. देवीदास इंगळे	पृ.10
4. 'प्रेरणास्त्रोत' कहानी में परिवर्तित नारी जीवन मूल्य	डॉ. प्रमोद परदेशी	पृ.15
5. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'ग्रहण' में नारी जीवन मूल्य	प्रा. मदन खरटमोल	पृ.19
6. 'एक टुकडा कस्तुरी' कहानी संग्रह में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य	डॉ.बाबासाहेब माने	पृ.22
7. उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'अन्तर्वन्शी' में चित्रित नारी के बदलते जीवन मूल्य	डॉ. गीतिका तँवर	पृ.29
8. इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कहानियों में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य	प्रा.रोहिणी साळवे	पृ.35
9. इक्कीसवीं सदी के हिन्दी कहानी साहित्य में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य	प्रा.शैलजा पाटील	पृ.39
10. इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य	डॉ.बाजीराव शेलार	पृ.44

Scanned by CamScanner

'एक टुकड़ा कस्तूरी' कहानी संग्रह में चित्रित परिवर्तित नारी जीवन मूल्य

डॉ. बाबासाहेब माने
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्री शिवछत्रपति महाविद्यालय,
जुन्नर , जिला– पुणे।

इक्कीसवीं सदी के जन–मानस के विचारों, आचारों एवं कार्यों में कई परिवर्तन दिखाई देते हैं। जीवन जीने का ढंग हो या समस्याओं का सामना करने का तरीका, जीवन को अपने लक्ष्य तक पहुँचाने की बात हो या जीवन मूल्यों को अपनाने की बात हो, इन सभी में पूर्व सदियों से इस सदी के जनमानस में जरुर भिन्नता नजर आती है । यह समय और माहौल का परिणाम है । समय के साथ नारी के जीवन मूल्य भी थोडे–से बदल गए हैं । परंतु यह बात उतनी ही सत्य है कि इक्कीसवीं सदी में भी नारी की हालत में उतना परिवर्तन नही हुआ है , जितना कि होना चाहिए । आज की नारी भी कोने में पडी सिसकती नजर आती है । नारी पर नाना तरह के बंधन सदियों से पुरुष ने लाद दिए हैं। वें बंधन पूरी तरह से समाप्त नही हुए हैं । आज भी नारी को कमजोर , लाचार एवं उपभोग की वस्तु के रुप में देखा जाता है। यह वर्तमान काल का दुर्भाग्य है कि आज की नारी पुरुष के बराबर खड़ी होकर हर क्षेत्र में काम कर रही है, फिर भी उसकी ओर देखने का पुरुषी नजरिया पूर्णतः बदल नहीं सका है। सदियों से नारी को दूसरों पर निर्भर रहनेवाली लाचार अबला समझा जाता रहा है। उसका इस्तमाल करना पुरुष अपना अधिकार समझता रहा है । इन्हीं धारणाओं से युक्त पुरुषी समाज निरंतर नारी को कुचलता रहा है। यह पुरुषी मानसिकता का एक संकीर्ण पहलु है । परंतु इसका दूसरा पहलु यह भी रहा है कि वैदिक जमाने से भारत में नारी को पूजनीय माना गया है । संस्कृत का तो सूत्र वाक्य ही रहा है कि **'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रंमते तत्र देवताः'**। अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता वास करते हैं। नारी के प्रति यह उक्ति इस

Scanned by CamScanner

दृष्टिकोण से कही गई है, कि प्राचीन जमाने के विद्वानों ने नारी के महत्व समझा था। उन्हें पता था कि नारी के बिना पुरुष अधूरा है। पुरुष की हर कामयाबी के पीछे नारी का ही हाथ रहा है । प्राचीन काल से लेकर आज तक के विविध ग्रंथों में नारी को आदर्शवत स्थान देने की बात कही जाती रही है ।

आधुनिक काल में भारत में शिक्षा, राजनीति, धर्म, व्यापार, संस्कृति, साहित्य, विज्ञान आदि क्षेत्रों में गति से परिवर्तन हुआ। नारी के प्रति देखने का पुरुषी नजरिया भी बदलने लगा। इसकी शुरुआत सती प्रथा निषेध अधिनियम 1828 ई. के द्वारा हो गई। इसके बाद अनेक कानून बनाए गए। ज्यों कानून नारी के जीवन को ऊपर उठाने में मद्दगार साबित हुए हैं । परिणाम स्वरुप भारत में एक बहुत बड़ा पुरुषी वर्ग नारी को समान अधिकार देने की बात कहने लगा है । आज नारी हर क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी है । उसने अपनी कामयाबी के झंडे गाढ़ दिए हैं । वह अपने अधिकारों को समझने लगी है, फिर भी उसका जीवन पूर्णतः नहीं बदल पाया है।

नारी जीवन में इक्कीसवीं सदी के पूर्व ज्यो पारिवारिक, सामाजिक, वैयक्तिक जीवन मूल्य थे, उनमें समय के अनुसार परिवर्तन आया है । जैसे–जैसे नारी शिक्षित होकर नए–नए क्षेत्रों में दाखिल हो गई, वैसे–वैसे उसके जीवन मूल्यों में भी परिवर्तन हुआ है। एक जमाना था, जब नारी को प्यार की बात किसी पुरुष के सामने व्यक्त करने की इजाजत नहीं थी । परंतु आज अगर किसी नारी का किसी पुरुष पर प्रेम आ जाता है, तो वह बिना किसी झिझक के निसंकोच अपने प्यार का इजहार करती पाई जाती है। किसी तरह का पारिवारिक एवं सामाजिक दबाब वह अपने आप में महसूस नहीं करती है। परंतु यह बात केवल उन नारियों तक ही सीमित है, जिनके परिवार वाले शहरों के संस्कारों में पले हों अथवा जों हाय क्लास सोसायटी के माने जाते हों। मध्यमवर्गीय या गांवों में बसे परिवारों में आज भी नारी को खुलेआम अपना प्रेम व्यक्त करने की इजाजत परिवार एवं समाज नहीं देता है । इसी की ओर **सूर्यबाला** की "एक

Scanned by CamScanner

टुकड़ा कस्तूरी में संग्रहित कहानियाँ संकेत करती हैं । इसमें प्रे
पर आधारित 12 कहानियाँ संकलित हैं ,जिसका प्रकाशन सन् 2014
अमन प्रकाशन , कानपुर से हो चुका है ।

नारी के जीवन में प्रेम एक महत्व पूर्ण मूल्य है । नारी पुरुष
निरिसम प्यार करना चाहती है, परंतु वह अपने परिवार के सामने व्यक्
नहीं कर पाती है । इस बात को **सूर्यबाला** की **"कागज की नाव
और चाँदी के बाल"** नामक कहानी स्पष्ट करती है , जो अपने आ
में अनूठी एवं प्रभावकारी है । इस कहानी की नायिका राजरानी है
जो एक संपन्न परिवार में पली–बढ़ी है । उसके पिता ने उसे अपन
पत्नी से तलाक लेकर कोर्ट से हासिल किया है। चुँकि आगे चलक
वह पूरी जायदाद की वारिस बन सके। अमीर खानदान में पली–बढ़
राजरानी का बचपन बिना माता के प्यार और अमीरी के बनावट
नियमों में गुजरा है । जब राजरानी छोटी थी तो उसकी कोठी
सामने ही एक पुरानी इमारत में किराए के मकान में एक लड़का रहत
था। वह गरीब था, परंतु वह मस्ती में जीवन जीता था । वह राजरान
के स्कूल में ही पढ़ता था । वह स्कूल के सभी कर्मचारियों की नक
उतारता था और जोर–जोर से टहाके मारकर हँसता था, साथ ह
राजरानी को भी हँसांता था। राजरानी और उस लड़के के बीच प्या
का धागा बंध गया था। वें साथ–साथ खेलते थे और अनेक कहानिय
भी पढते थे । वह राजरानी का सबसे अच्छा दोस्त बन गया था
प्रौढावस्था में राजरानी को वह समय–समय पर याद आता है
राजरानी ने बचपन में एक सुनहले बालों वाली राजकुमारी की कहान
उस लड़के को सुनाई थी, तब उन दोनों में जो संवाद हुआ था, व
सवांद इस कहानी का मूल बिंदु है।

आज की नारी एक ओर तो पारिवारिक मूल्यों का जतन बड़ी खू
से कर रही है , पर उसके अंदर की अतृप्त सोच को अपने परिवार
समाने बयान नहीं कर पा रही है । परंतु इतना साहस उसमें अव

Scanned by CamScanner

पैदा हो गया है कि वह अपने विचारों एवं अतृप्त भावों को कहानियों एवं उपन्यासों के माध्यम से व्यक्त कर सके।

एक ओर नारी अपने परिवार के हर मोर्चे पर पुरुष के साथ उसका अभिन्न अंग बनकर खड़ी है। उसका अकेलापन उसे सताता है । ऐसे में वह अपने आप को बचपन की यादों के सहारे तसल्ली देना चाहती है। इसी को राजरानी के माध्यम से लेखिका यूँ बयान करती है – "यह एक बहुत पुराना सिलसिला अभी तक, अधेड़ हो जाने तक चला आता है । जाने–अनजाने प्रसंगों के बीच अचानक उसकी कोई बात याद आ पड़ती है और मैं बरबस मुसकरा पड़ती हूँ। ध्यान तब आता है, जब मेरे पति या बच्चे मुझे टोककर होश में आने के लिए कहते हैं और क्षण भर के लिए मैं एक अनाम अपराधबोध से ग्रस्त हो जाती हूँ, लेकिन चुँकि ऐसा बहुत कम ही होता है जबकि मैं पति–बच्चों से घिरी रहती होती होऊँ, इसलिए मौका पाते ही 'वह' खिड़की से अंदर फलाँग लेता है और हमारी बेबात की हँसी–ठिठोली शुरु हो जाती है।" बचपन की यादों का सहारा राजरानी को जीवन के असंख्य पड़ावों में खुशी देता है । उसे बरबस मुसकुरा देता है । उसके एकांत एवं खाली पलों को खुशियों से भर देता है । परिवार के सुख–दुःख उसके अपने सुख–दुःख होते हैं , परंतु उसके हृदय में असंख्य गहरे भाव छिपे रहते हैं। उन भावों को कभी भी वह परिवार के विकास के समाने अवरोध बनाकर खड़ा नहीं करती है। परिवार की तरक्की में वह अपने आप को समर्पित कर देती है । यह नारी जीवन का महत्त्वपूर्ण मूल्य है, , जो समर्पण के रुप में उभरकर सामने आता है।

सूर्यबाला की दूसरी एक कहानी है, जिसमें उन्होंने नारी की त्यागी वृत्ति को बड़े ही प्रभावशाली ढ़ंग से व्यक्त किया है । इस कहानी का नाम है – "न किन्नी न....।" इस कहानी की मुख्य पात्र किरण है। उसे घरवाले प्यार से किन्नी नाम से पुकारते हैं। किरण एक विचारशील एवं पढ़ी–लिखी लड़की है । उसके परिवार में उसका एक भाई, उसकी पत्नी, तीन बच्चे और माँ हैं । यह परिवार मध्यमवर्गीय

Scanned by CamScanner

परिवार है। किरण स्वयं ही दूसरे लोगों के द्वारा उसके साथ कि गए व्यवहारों को बयान करती है और अपनी त्यागी भावना का परि देती है । किरण की बिजनौर वाली मौसी अमीर है । उसके प शक्कर की मील में मैनेजर हैं । उनके दो बच्चे हैं–गगन और रो । उनके घर में काफी सुविधाएँ हैं , जो किसी रईस घर में होती है मौसी जब भी किरण के घर आती थी, तो अनेक तरह की सौग लाती थी । मौसी के दोनों बच्चे गगन और रोजी भी किरण के घ आतै थे, जिसकी वजह से घर में हमेशा हँसी–मजाक, शोर म रहता था। इसी कारण किरण की पढाई में अवरोध आता था , त किरण पड़ोस में कटरेवाली चाची के यहाँ पढ़ाई करने चली जाती थ । इस बार भी जब किरण पढ़ाई करने के लिए चाची के घर चली ग तो उसे पता चला कि चाची का भांजा आकाश भी पढ़ाई करने लिए आया है । वह रिसर्च कर रहा है। जब इन दोनों की मुलाका हो जाती है, तब किरण के मन में आकाश के प्रति प्यार का भा जाग जाता है । उसे आकाश एक कस्तूरी के समान लगने लगता है दोनों के बीच कुछ दिनों तक संवाद एवं मुलाकात का सिलसिल शुरु रहता है ,परंतु प्यार का इजहार बिलकुल नहीं होता। इध मौसी अपनी जवान बेटी रोजी की शादी के लिए लड़का ढूँढ रही है इसी बहाने वह किरण के घर आ गई है । परंतु जिस लड़के को व विवाह के लिए तैयार करने आयी थी, उस लड़के ने रोजी को ठुकर दिया, इसलिए मौसी परेशान हो गई । उसी समय आकाश किरण क घर आ जाता है और मौसी की नजर उस पर पड़ जाती है । मौसं आकाश के बारे में सबकुछ पता करके उसे रोजी के साथ शादी कर के लिए तैयार कर ही लेती है। रोजी और आकाश की शादी हो जात है। दस सालों तक दोनों की जिंदगी आराम से कटती है । उन्हें द बच्चे भी हो जाते हैं, परंतु तीसरे बच्चे के समय रोजी मर जाती है इतने सालों तक किरण ने जिस प्रकार की अधूरी एवं त्यागभरी जिंद बिताई है। वह सचमुच ही पीड़ादाई है। जिस आकाश के प्रति किर के ह्रदय में एक पति के रुप में पाने की चाहत थी । वह अधूरी ही र जाती है । वह बिना शादी अपना जीवन बिताने के लिए मजबूर है

Scanned by CamScanner

जाती है । जिस समय किरण आकाश को चाहने लगी थी । उस समय किरण के घर की हालत इतनी अच्छी नहीं थी कि दहेज देकर वह आकाश के साथ शादी कर सके। आकाश और किरण के बीच के प्यार का मौसी को पता था . परंतु मौसी ने अपने स्वार्थ के आगे किरण के प्यार को दरकिनार करके अपनी बेटी की शादी आकाश के साथ कर दी थी। अत: किरण अपनी भावनाएँ प्रकट करती हुई कहती है – "शादी मेरी नहीं हुई थी । इसे सुधारकर – 'मैंने नहीं की थी' कर लीजिएगा, क्योंकि अपने विवाह के लिए दहेज जुटा पाने की मेरी हैसियत नहीं थी । इसे भी सुधारकर–'दहेज जुटाने के पक्ष में मैं नहीं थी' कर लीजिएगा । भाई की हालत और हैसियत जग–जाहिर थी ।"

उक्त कथन से स्पष्ट है, कि किरण ने जिस तरह का त्याग किया है , वह प्रशंसनीय है । यह भी नारी जीवन का बदला हुआ एक अनूपम मूल्य है । आजकल की लडकियाँ शिक्षित होने की वजह से दहेज के खिलाफ हो गई हैं। यह नारी के विकास का एक उच्चतम् पहलु माना जा सकता है । किरण दहेज के खिलाफ थी । वह आकाश को मन–ही–मन प्यार करती थी । उसके साथ शादी करना चाहती थी । परंतु आकाश की तंगहाली को देखकर किरण की मौसी ने अपनी बेटी के लिए एक प्रकार से आकाश को खरीद ही लिया था। जबकि मौसी तो किरण से भी प्यार करती थी । परंतु उसने इस समय एक बार भी उसके प्यार का विचार नहीं किया और अपनी बेटी के लिए आकाश जैसा लड़का रुपये–पैसों की बौछार करके खरीद ही लिया । किरण का यह जो दुःख है, वह बेहत कचोट पहुँचाने वाला है । इतना होने बावजूद भी किरण को अपनी मौसी से कोई शिकायत नहीं है । वह टीचर बन गई है । अपनी नौकरी के पैसों से वह अपनी माँ, भाई एवं उसकी पत्नी तथा उनके बच्चों का पालन–पोषण कर रही है । जब रोजी का देहांत हो जाता है। तब मौसी किरण की माँ के सामने आकाश के साथ रहने और उसके बच्चों का पालन–पोषण करने के प्रस्ताव रख देती है । मन में न होते हुए भी किरण उसे स्वीकार कर लेती है । इससे समझ में आता है, कि नारी के त्याग में कितनी

Scanned by CamScanner

उदारता आ गई है कि वह अपनी उम्मीदों एवं भावनाओं को दिल के अंदर दबाकर और अपना सर्वस्व त्यागकर दूसरों के लिए सहयोग करती है । इसी तरह से इक्कीसवीं सदी के नारी के जीवनगत मूल्यों में अनेक तरह से बदलाव नजर आता है । समाज में एक ओर वह नारी है, जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का बिलकुल भी विचार नहीं करती है, फिर चाहे वें उसके दूर के रिश्तेदार हों या उसके अपने करीबी, तो दूसरी ओर एक नारी वह भी है जो खामोशी से सब कुछ सह लेती है , फिर भी अपना दुःख किसी के सामने प्रकट नहीं करती है । अपने दुःखों को हृदय में ही दबाकर समय के साथ चलने के लिए विवश है ।

.....

Scanned by CamScanner

इक्कीसवीं सदी का युग भूमंडलीकरण तथा वैश्वीकरण का युग माना जाता है। इस युग में वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास के कारण सभी क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन आया। उसका प्रभाव मानवी जीवन पर विशेषत: नारी जीवन पर अधिक पडा। परिणामत: नारी जीवन मूल्य और अधिक तेजी से परिवर्तित हुए। इक्कीसवीं सदी का हिन्दी कथा साहित्य नारी की इस भावनात्मक यात्रा का लेखा-जोखा है।

संगोष्ठी उद्घाटन समारोह : प्रा.प्रकाश ताकभाते, डॉ.नवनीत चौहान, डॉ.प्रमोद परदेशी, डॉ.हुकनाथ पांडेय, प्राचार्य डॉ.पंजाबराव रोंगे तथा उपप्राचार्य डॉ.अब्दुलशुकूर शेख

ISBN 978-93-81549-96-4

Scanned by CamScanner